PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL Vol 2, Issue 1

वैश्विक हिंदी: हिंदी का विश्व

डॉ. हाशमबेग मिर्झा
सहयोगी प्राध्यापक ,हिन्दी विभाग,
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
नलदुर्ग, जि. उस्मानाबाद 413602

महाराष्ट्र के प्रसिध्द संत ज्ञानेश्वर ने अपनी प्रसिध्द रचना ज्ञानेश्वरी में वसूधैव कुटुबकम् में पूरे संसार को एक परिवार में बांधने की कल्पना की थी। तब उनका अभिप्राय भक्ति से संबंधित होगा या फिर संसारिक एकता से । किंतु पूरे संसार को एक परिवार में देखना तत्कालीन समय में बहुत बड़ा दृष्टिकोण था। आज भूमंडलिकरण, वैश्विकरण या गलोबलाइझेशन की बात हो रही है। संसार इंटरनेट, मोबाईल, फॅक्स, टेलिव्हीजन या अन्य संचार माध्यमों से सिमट रहा है। विद्वानों के अनुसार इस विकास गति में हम भौतिक सुख को जीवन का मूल मान कर अपनी संस्कृति से बिछड़ रहे हैं। डॉ. नरसिंह प्रसाद दुबे के अनुसार - हर माह कुछ भाषाएॅ. लुप्त हो रही है। एक भाषा की समाप्ति मतलब एक संस्कृति की समाप्ति होती है। एक ओर इस देश से या संसार से एक-एक भाषा का लोप हो रहा है वहीं दूसरी ओर व्यापार की भाषाएॅ दूसरी भाषाओं के शब्दों को ग्रहण कर नई चाल में ढल रही है या फिर धूमिल के शब्दों में कहे तो भाषा बलात्कार के बाद जवान होती है। यही सब हिंदी भाषा के साथ हो रहा है। हिंदी केवल बाजार की भाषा नहीं रही वह तो विश्‍व भाषा बनने जा रही। जो सर्वेक्षण एवं अध्ययन से स्पष्ट हो चूका है।

1) विश्व में हिंदी का स्थान:

आज भारत की आबादी लगभग 120 करोड है जिसमें से 80 प्रतिषत लोग हिंदी में पढ़ते-लिखतें और बोलते हैं। अतः भारत में हिंदी भाषी लोगों की संख्या लगभग 96 करोड है। फिर पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल, बांग्लादेश, भूतान में हिंदी भाषियोंकी संख्या बहुत बड़ी मात्रा में है। विश्‍व के लगभग 150 से अधिक देशों में हिंदी बोलने वाले है। इस तरह हिंदी भाषी लोग विश्‍व में चीनी और अंग्रेजी भाषा से भी अधिक है अतः हिंदी विश्‍व में सबसे अधिक लोगों की भाषा हैं।

2) वैश्विकरण और हिंदी:

वैश्विकरण की प्रक्रिया मूलरूप से अमरिका में आरंभ हुई। पुरे योरोप ने इसे स्वीकार किया। इसका असर अमिर-गरीब, शिक्षित-अशिक्षित सभी पर पड़ा और देखते ही देखते पूरे विश्व की मानसिकता ही बदल गई। एक समय अपनी संस्कृति और अपने धर्म को महत्व देने वाला इन्सान वैश्विक संस्कृति की बात करता नजर आ रहा है। भारतीय व्यक्ति अमेरिका की उपभोगक्तावादी संस्कृति में जीना चाहता है तो अमरिकन नवयुवक भारतीय शास्त्रीय संगीत , योगा और आयुर्वेद में जनकल्यान देख रहा है। इस सब के लिए भाषा प्रमुख औजार है। इसी कारण योरोप और अमरिका में हिंदी भाषा को बढावा मिल रहा है। अर्थिक बजट से निश्चीत राशी हिंदी के लिए खर्च करने की बात चीन, अमेरीका, इग्लंड और आस्टॅªलिया जैसे देश कर रहे है। अतः वैश्विकरण की प्रक्रिया में हिंदी को बढावा दिया जा रहा है। शायद यही कारण है कि अमरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुशने 114 मिलियन डालर राशी हिंदी सिखने के लिए खर्च की थी तो बराक ओबामाने हिंदी सिखने और सिखाने के लिए एक (ॅपदकप बमसस) हिंदी कक्ष की स्थापना की है। यह हिंदी और हिंदी भाषियों की मेहनत का नतिजा है।

3) विश्व सम्मेलन और हिंदी:

हिंदी विश्व सम्मेलन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किया जाता है, जिसमें विश्व भर के हिंदी विद्वान, पत्रकार, भाषाविद्, साहित्यकार एवं हिंदी प्रेमी एकात्रित होकर हिंदी भाषा और साहित्य पर विचार मंथन करते हैं। अब तक आठ आंतरराष्ट्रीय विश्व हिंदी संम्मेलन सफलता पूर्वक आयोजित किए जा चूके है। यह सम्मेलन लगभग चार वर्षो में एक बार विश्व के किसी एक देश में आयोजित किए जाते हैं। जिसमें -

1) प्रथम विश्व सम्मेलन:

10 से 14 जनवरी 1975 को भारत नागपूर में राष्ट्रभाषा समिति वर्धा के तत्वावधान में आयोजित किया गया था। जिसके अध्यक्ष महामहिम उपराष्ट्रपति बी. डी. जत्ती थे तथा मुख्य अतिथि मॅरिशस के प्रधानमंत्री शिवसागर रामगुलाम थे । इस सम्मेलन में 30 देशों के 122 हिंदी प्रेमियों ने प्रतिनिधित्व किया था।

2) द्वितीय विश्व सम्मेलन:

28 से 30 अगस्त 1976 को मॅरिशस की राजधानी पोर्ट लई में हुआ। इसके अध्यक्ष स्वंय मॅरिशस के प्रधानमंत्री शिवसागर रामगुलाम थे। जिसमें भारत के 23 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल के साथ केंद्रिय मंत्री कर्ण सिंह ने हिस्सा लिया था। जिसमें विश्व के 17 देशों के 181 हिंदी प्रेमियों ने भाग लिया था।

3) तृतीय विश्व सम्मेलन:

28 से 30 अक्तुबर 1983 को भारत की राजधानी दिल्ली में लोकसभा के अध्यक्ष डॉ. बलराम जाखड की अध्यक्षता में यह सम्मेलन संपन्न हुआ। जिसमें प्रमुख अतिथि मॅरिशस के हरिश बुधू थे जिसमें 260 देशों के 6566 हिंदी प्रेमियों ने विचार मंथन किया था।

4) चतुर्थ विश्व सम्मेलन:

02 से 04 दिसंबर 1993 को दूसरी बार मॅरिशस की राजधानी पोर्ट लूई में चतुर्थ विश्व सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसके अध्यक्ष वहाँ के सास्कृतिक मंत्री मुक्तेश्वर चुनी थे। भारत सरकार की ओर से मधुकररावजी चैधरी प्रमुख अतिथि बने । इस सम्मेलन में 200 से अधिक विदेशी हिंदी प्रेमियों ने सहभाग लिया था।

5) पंचम विश्व सम्मेलन:

04 से 08 अप्रेल 1996 में त्रिनिनाद एवं टोबेगो की राजधानी पार्ट ऑफ़ स्पेन में हिंदी निधि इस संस्थाने पंचम विश्व सम्मेलन आयोजित किया। जिसके अध्यक्ष चंका सीताराम थे। मुख्य अतिथि के रूप में भारत के अरूणाचल प्रदेश के राज्यपाल माता प्रसाद जी थे जहाँ पर अप्रवासी भारतीय और हिंदी पर बहस हुई जिसमें 257 से अधिक विदेशी हिंदी प्रेमियों ने सहभाग लिया था।

6) षष्ठम् विश्व सम्मेलन:

14 से 18 सितंबर 1999 को यू के लंडन में छटा विश्व सम्मेलन का आयोजन डॉ.कृष्ण कुमार ने किया जिसके अध्यक्ष पद्मेश गुप्त थे। भारत सरकार की ओर से विदेश राज्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे और प्रसिध्द साहित्यकार डॉ. विद्यानिवास मिश्र वहाँ पधारे थे। जिसका विषय था - हिंदी और भावी पिढ़ी । इसमें 21 देशों के 700 से अधिक हिंदी प्रेमियोंने अपना सहभाग दिया था।

7) सप्तम् विश्व सम्मेलन:

05 से 09 जून 2003 को सूरीनाम की राजधानी पारामारिबो में आयोजित किया गया । जिसके आयोजक जानकी प्रसादसिंह थे। भारत सरकार की ओर से दिग्विजय सिंह ने इसमें शिरकत फरमाई । जिसका केंद्रिय विषय था - विश्व हिंदी नई शताब्दी की चुनौतिया इसमें भारत की ओर से 200 हिंदी प्रेमियों ने हिंस्सा लिया था।

8) अष्टम् विश्व हिंदी सम्मेलन:

13 से 15 जुलाई 2007 को यु.एस.ए. की राजधानी न्यूयार्क में आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन भारतीय विद्या भवन ने आयोजित किया। इसी में हिंदी का जालस्थल प्रभासाक्षी. क़ोम भी निर्माण किया

गया। इस सम्मेलन का विषय था - विश्व मंच पर हिंदी। विश्वसत्ता अमरिका में यह सम्मेलन होने से इसकी खूब चर्चा मिडिया में हुई।

9) नवम् विश्व हिंदी सम्मेलन:

22 सितंबर से 24 सितंबर 2012 को दक्षिण अफ्रीका की राजधानी जोहान्सबर्ग में नवम् विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया था। जो बडी धूम-धाम से संपन्न हुआ। जिसमें 22 देशों के 600 से अधिक हिंदी प्रेमियों ने हिस्सा लिया था। जो बेहद सफल रहा।

10) दशम् विश्व हिंदी सम्मेलन:

विगत वर्ष 10 से 12 सितंबर 2015 को झील के शहर और मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में दशम् विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया था। जिसका उद्घाटन भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्रजी मोदी ने किया । जिसमें सुचना एवं प्रौद्यौगिकी मंत्री सुषमा स्वराज के साथ मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री पृथ्वीराजसिंह चैहान और अन्य बडे नेताओं के साथ कई वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार भी शामिल हुए थे।

4) वैश्विकरण: मिडीया और हिंदी:

हिंदी आज हमारे रोजी - रोटी का जरीया बन गई है। अब हमें उसी दृष्टी से देखना होगा। वैश्विकरण ने हिंदी के माध्यम से बाजार को हमारे समक्ष लाकर खड़ा कर दिया है। हमें उस बाजार का उपयोग एवं उपभोग करते आना चाहिए। हिंदी का भविष्य क्या होगा इसकी हमें चिंता करने की जरूरत नहीं है क्यों कि हिंदी उसके लिए समर्थ है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण पूरा विश्व उसके सामने नतमस्तक हुए खडा है। हिंदी भाषा से आंतरराष्ट्रीय भाषा के पद् पर विराजमान हो रही है इसके लिए हिंदी ने किसी कुटनिति का सहारा नहीं लिया। उत्तर आधुनिकता के युग में भाषा वैज्ञानिकों द्वारा स्थापित सिध्दान्त भी गलत साबीत हो रहे है। बोली आगे चलकर भाषा का रूप धारण करती है लेकिन वैश्विकरण या बाजारीकरणने बोलियों को कुचल कर रख दिया है। कई भाषाए बोलियों में परिवर्तित होती नजर आ रही है तो कुछ भाषाय लुप्त हो रही है। यह खतरा हिंदी के लिए नहीं है हिंदी वैश्विक भाषा बनने जा रही है इसका सर्वस्व श्रेय मिडीया को जाता है । मराठी में एक कहावत है - ‘‘विकेल तोच ठिकेल’’ हिंदी बाजार की भाषा बन गई है या बाजार को स्थापित करने वाली भाषा के रूपमें हिंदी की महत्ता सर्व विदित हो चुकी है।

मीडिया ने अपने आपको बचाने के लिए हिंदी का सहारा लिया है। इस कारण हिंदी में कुछ बाजारूपन आगया है जो न के बराबर है।

5) हिंदी की वैश्विक स्थिति:

डॉ. जयंजीप्रसाद नौटियाल के 20 वर्षो के अथक अध्ययन सर्वेक्षन से यह स्पष्ट हो चुका है कि अब हिंदी भाषा बोलनेवालों की संख्या विश्व में सर्वाधिक है। कुछ वर्ष पूर्व तक हिंदी भाषा बोलनेवालो की संख्या भले ही दूसरे या तीसरे स्थान पर थी किंतु पिछले दो दशकों मे प्रवासी भारतीय और वैश्विक गतिविधियों के परिवर्तन के परिणाम स्वरूप हिंदी प्रथम स्थान पर पहुँच चुकी है। साथ ही अरब अमिरात में हिंदी - उर्दू का बोलबाला है जिससे हिंदी की संख्यामें बढोतरी हुई है। हिंदी के प्रति विदेशों में बदलती मानसिक ता के कारण कई विश्वविद्‍यालयों में हिंदी भाषा अध्ययन अध्यापन का विषय बनी हुई है।

विदेशों में 93 से अधिक देशों में 600 से अधिक विश्वविद्‍यालयों, महाविद्‍यालयांए और स्कुलों में हिंदी अध्ययन - अध्यापन हो रहा है। मॅरिशस, नेपाल, श्रीलंका, फिजी, संयुक्त अरब अमिरात, अमेरिका, आस्टेªलिया, यू. के, रूस, त्रिनिनाद एवं टोबे गो , गुयाना, पाकिस्थ्तान, मालदीप, फ्रांस, इटली, स्वीडन, आस्ट्रीया, नार्वे, डेनमार्क, स्वीझरलैंड, जर्मन, रोमानिया, बल्गारिया, जपान, हॅंगेरी, गुयाना आदि विश्व के कई देशों के विश्वविद्‍यालयों में हिंदी अध्ययन की सुविधा है। विश्व के प्रसिध्द विश्वविद्‍यालय केंब्रिज, यार्क, आक्सफर्ड, येन, यूनिव्हसीटी और वेस्ट इंडिज में हिंदी पीठ की स्थापना की गई है।

6) संयुक्त राष्ट्रसंघ और हिंदी:

संयुक्त राष्ट्रसंघ की आधिकारिक भाषाओं में - 1) चीनी 2) अंग्रेजी 3) स्पेनिश 4) अरबी 5) रूसी 6) फ्रांसीसी है। इसमें हिंदी भाषा को स्थान दिलाने हेतु पिछले 30 वर्षो से प्रयत्न किये जा रहे हैं। अब तक आठ विश्व सम्मेल्लन बड़ी धूम-धाम से आयोजित किए गये। भारत सरकारने उन पर करोडो रूपये का खर्च भी किया है। प्रोफेसर महावीर सरन जैन निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, भारत सरकार के अनुसार विश्व में हिंदी बोलने वालों की संख्या 960 मिलियन (लगभग सौ करोड) है अतः हिंदी बोलने, समझने, अध्ययन-अध्यापन एवं व्यवहार करने वाले विश्व में सबसे अधिक है। अब तो 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के रूपमें मनाया भी जा रहा है। अतः अब वह दिन दूर नहीं जब हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ में आधिकारीक भाषा का स्थान प्राप्त हो जाएगा।

7) हिंदी प्रचार-प्रसार की वैश्विक संस्थाए:

हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु भारत और भारत के बाहर विदेश में कई संस्थाए कार्य कर रही है, जिंहें अनदेखा नहीं किया जा सकता । इन्हीं संथाओं के कारण विदेशों में हिंदी भाषा एंव हिंदी शिक्षण के प्रति लोगों में आकर्षण निर्माण हुआ है। इनमें प्रमुख है -

1) राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

2) हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

3) दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा,चेन्नई

4) टी डी आई एल (भारतीय भाषाओं में तकनिकी विकास)

5) सी - डैक पुणे

6) रिसोर्स सेंटर फॉर इंडियन लैंग्वेज टेक्नालाजी सोल्यूशंस

7) महात्मा गांधी हिंदी विश्व विद्यालय वर्धा

8) केन्द्रीय हिंदी संस्थान नई दिल्ली

9) साहित्य अकादमी नई दिल्ली

10) बंबई हिंदी विश्वविद्यालय

11) केन्द्रीय सचिवालय, हिंदी परिषद नई दिल्ली

12) उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ

13) भारतीय भाषा न्यास, मुंबई

14) हिंदी भवन, नई दिल्ली के अलावा विदेशियों में

15) हिंदी साहित्य सभा, टोरंटो, कनाडा

16) अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति सेलम, अमेरिका

17) गीतांजली मल्टीलिंग्वल लिटरेरी सर्किल, टेंट, इंग्लड

18) हिंदी परिषद निदरलैंड

19) हिंदी निधि - टोबॅगो

20) यू. के. हिंदी समिति, लंदन

21) भारतीय विद्याभवन, अमरिका

22) अखिल विश्व हिंदी समिति अमेरिका

23) नेपाल हिंदी साहित्य परिषद, काठमांडू

24) हिंदी प्रचारिणी सभा मॉरिशस

25) हिंदी सोसायटी सिंगापूर

26) आस्टेशलिया हिंदी समाज, सिडनी

आदि सभाओं और संस्थाओं ने हिंदी को पूरे विश्व में फुलने - फैलने में मदत की है। यह हिंदी साहित्य के साथ ही हिंदी भाषा और हिंदी शिक्षण एवं भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार करती है।

8) संचार माध्यम और हिंदी भाषा:

वैश्विक भाषा के रूप में जब भी हिंदी भाषा की चर्चा हुई तब हिंदी को संचार माध्यमों से जोड़ कर उसकी उपयोगिता को नकारा गया। किंतु पिछले दो दशकों में हिंदी के विकास की गति को देखा जाए तो पूरे संसार में हिंदी ने अपनी शक्ति, उपयोगिता सिध्द कर दी है। चाहे मुद्रित माध्यम हो या फिर दृश्य - श्रव्य माध्यम आज चारों ओर हिंदी का बोल बाला है। कुछ वर्षो पहले तक कम्प्यूटर , वेब पब्लिशिंग या प्रिंट मिडिया के लिए हिंदी में फांट संदर्भ में कई समस्याओं को व्यक्त किया गया किंतु अब यूनिकोड के जरिए कम्प्यूटर और इंटरनेट के क्षेत्र में हिंदी भाषा ने अपनी उपयुक्तता सिध्द कर दी है।

श्रव्य माध्यमों में भारतीय थ्ड के साथ अमरिका और चीन में हिंदी गीत थ्ड पर बेहद लोकप्रिय हो रहे हैं। बी. बी. सी. लंदन या कोलंबो रेडियो पूरे संसार में छाया हुआ है । हिंदी गीतों के साथ हिंदी फिल्म भी पुरे विश्व के थियटरों में एक साथ प्रदर्शित हो रहे है। हिंदी फिल्म ऑस्कर के दौड में न केवल साझेंदारी निभा रहे हैं बल्कि विगत वर्ष में पूरे संसार ने भारत ए. आर रहमान के साथ जय हो का नारा लगायाहै। भारतीय फिल्म सितारे अमिताभ, शाहरूख, सलमान पूरे संसार के फिल्म सितारे बन गये है। भारतीय संगीत का बोलबाला पहले से ही था अब उसे और भी महत्व प्राप्त हो गया है। शास्त्रीय संगीत के हिंदी बोल सिखने कभी मायकल जॅकसन, मॅडोना तो कभी ब्रिटनी स्पीयर्स भारत आ रहे है। यह हिंदी भाषा की प्राणवत्ताशक्ति ही है।

भारत के साथ - साथ उस्ताद बिस्मिल्लाह खान की शहनाई, उस्ताद जाकिर उसैन का तबला, सूधा चंद्रन का शास्त्रीय नृत्य, पंडित जसराज और पंडित भिमसेन जोशी को पूरा विश्व अपनी धरोहर मान चूका है इन्होने भारतीय संस्कृति और हिंदी भाषा के गौरव को पूरे संसार में बढ़ाया है। इनको चाहने

वाले कभी श्रव्य माध्यम से तो कभी दृश्य - श्रव्य माध्यमों से उन्हे सूनते, देखते हैं। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार को वे अप्रत्यक्ष योगदान दे रहें हैं।

हिंदी को आज बाजार की भाषा माना गया है, कुछ वर्ष पूर्व तक भारत विदेशी खिलौने की नकल अपने देश में बनाता था, अब भारतीय ढंग के खिलौने विदेशी राष्ट्र बनाकर भरत बेच रहे हैं। चाहे भाई के कलाई की राखी हो या गणपति भारतीय बाजार में पूरे संसार के व्यापारि जमा हो रहे हैं। इनका मकसद चाहे पैसा कमाना हो किंतु भाषा के रूप में हिंदी का ही प्रयोग हो रहा है। व्यापार के कारण हिंदी विज्ञापन की महत्वपुर्ण भाषा बन गई है। एक सर्वेक्षण के अनुसार हिंदी विज्ञापन में पूरे संसार के लगभग 20 - 25 हजार करोड रूपये लगे हुए हैं। इससे हम हिंदी की लोकप्रियता एवं महत्व को महसूस कर सकते है। वैश्विक धरातल पर चाहे अमेरिका, फ्रांन्स, इग्लैड या चीन महत्व पुर्ण देश हो किंतु इन सब की नजर भारत की भूमि या बाजार पर है। इसका पूरा फायदा हिंदी भाषा को मिल रहा है। जो कभी खड़ीबोली के रूप में एक बोली थी आज वह विश्व भाषा बनने जा रही है। हिंदी भाषी लोगों की संख्या अगर सौ करोड मानी जाए तो विश्व के प्रत्येक 06 लोगों में एक आदमी हिंदी भाषा समझने, पढ़ने, जानने या बोलने वाला है। अतः हिंदी विश्व की है और विश्व हिंदी का है।

संदर्भ बिंब

1) संयुक्त राष्ट्र की अधिकारिक भाषा हिंदी - प्रो. महाविर सरन जैन

2) भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी - डॉ. अनिलकुमार दूबे

3) विश्व भाषा बनेगी हिंदी - संजय द्विवेदी

4) विदेशों में हिंदी का बढ़ता प्रभाव - राकेश शर्मा निशीथ

5) वैश्विकरण की प्रक्रिया और हिंदी भाषा - डॉ. हाशमबेग मिर्झा

6) हिंदी का ग्लोबल आत्म विश्वास - सुधीर पचैरी

7) हिंदी एक अंतरराष्ट्रीय भाषा है - राजेंद्र महतो नेपाल

8) वैश्विकरण मीडिया और हिंदी - डॉ. अच्यूतानंद मिश्र